चन्द्रमा, अग्नि, विद्युत् आदि की सहायता चाहिए। परन्तु वैकुण्ठ-जगत् में इनकी कोई आवश्यकता नहीं है। वैदिक शास्त्रों के अनुसार श्रीभगवान् की ज्योति से ही सब कुछ प्रकाशित है। इससे सिद्ध होता है कि उनकी स्थिति इस प्राकृत-जगत् में न होकर उस वैकुण्ठ-जगत् में है, जो सुदूर परव्योम में है। यह भी वेदसम्मत है। **आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्।** सूर्य की भाँति वे भी नित्य ज्योतिर्मय हैं, पर इस प्राकृत-जगत् के अन्धकार से अति परे हैं। उनका ज्ञान दिव्य (लोकोत्तर) है। वेद कहते हैं कि ब्रह्म घनीभूत ज्ञान है। जो उस वैकुण्ठ-जगत् को जाने के लिए यथार्थ में उत्कण्ठित है, सबके अन्तर्यामी श्रीभगवान् उसे स्वयं ज्ञान प्रदान करते हैं।

एक वैदिक मन्त्र में उल्लेख है, **तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये।** यदि मुक्ति की अभिलाषा हो तो श्रीभगवान् की शरण अवश्य ले लेनी चाहिये। **ज्ञेय** अर्थात् जानने योग्य तत्त्व के सम्बन्ध में वेदवाणी है—**तमेव विदित्वातिमृत्युमेति,** "उनको जानने से ही जन्म-मृत्यु के बन्धन से छुटकारा हो सकता है।" श्रीभगवान् ईश्वररूप में जीवमात्र के हृदय में बैठे हैं; उनके हाथ-पैर आदि सब ओर हैं। जीव के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता। अतः यह मानना पड़ेगा कि देहरूपी क्षेत्र के दो ज्ञाता (क्षेत्रज्ञ) हैं—जीव-क्षेत्रज्ञ और परमात्मा-क्षेत्रज्ञ। जीव के हाथ-पैर एकदेशीय हैं, जबकि श्रीकृष्ण के हाथ-पैर आदि सर्वव्यापक हैं। श्वेताश्वतरोपनिषद् इसका समर्थन करती है, **सर्वस्य प्रभुमीशानं सर्वस्य शरणं बृहत्।** वे श्रीभगवान् परमात्मा सम्पूर्ण जीवों के प्रभु हैं और वे ही आत्यन्तिक आश्रय हैं। अतएव यह निर्विवाद रूप में सिद्ध हो जाता है कि परमात्मा और जीवात्मा में शाश्वत् भेद है।

इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः।
मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते।।१९।।

इति=इस प्रकार; **क्षेत्रम्**=क्षेत्र (देह); **तथा**=और; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **ज्ञेयम्**=जानने योग्य तत्त्व; **च**=भी; **उक्तम्**=कहा गया; **समासतः**=संक्षेप से; **मद्भक्तः**=मेरा भक्त; **एतत्**=यह सब; **विज्ञाय**=जान कर; **मत् भावाय**=मेरे स्वभाव को; **उपपद्यते**=प्राप्त होता है।

अनुवाद

इस प्रकार क्षेत्र (देह), ज्ञान और जानने योग्य तत्त्व का स्वरूप मेरे द्वारा संक्षेप से कहा गया। केवल मेरा भक्त ही इसे जान सकता है और इस प्रकार जान कर मेरे स्वभाव को प्राप्त हो जाता है।।१९।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् ने क्षेत्र, ज्ञान तथा जानने योग्य तत्त्व का संक्षिप्त वर्णन किया है। इस ज्ञान में ज्ञाता, जानने योग्य तथा जानने का साधन—इन तीन तत्त्वों का समावेश है। एक साथ इन्हें **विज्ञान** कहा जाता है। एकमात्र शुद्ध अनन्य भगवद्भक्त